Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता में डिजिटल साक्षरता की भूमिका

[1] Jyoti, [2]Dr. Shweta Mehta (Assistant Professor)

[1]Research Scholar, [2]Supervisor

[1-2] Department of Sociology, Tantia University, Sri Ganganagar (Raj.)

सार

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता सामाजिक समानता और समावेशी ग्रामीण विकास का महत्त्वपूर्ण आधार है। डिजिटल साक्षरता महिलाओं को बैंकिंग सेवाओं, सरकारी योजनाओं, कौशल प्रशिक्षण, बाजार और स्वरोजगार के अवसरों से जोड़ने का प्रभावी माध्यम बन रही है। प्रस्तुत शोध-पत्र में ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता में डिजिटल साक्षरता की भूमिका का वर्णनात्मक एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। इसमें डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन भुगतान, सरकारी सहायता, कृषि संबंधी जानकारी और डिजिटल विपणन की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया है। डिजिटल साधनों के उपयोग से महिलाएँ बैंक खातों का संचालन, बचत एवं लेन-देन का प्रबंधन, उत्पादों का प्रचार और बाजार संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकती हैं, जिससे उनकी आय, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। इसके बावजूद शिक्षा की कमी, डिजिटल उपकरणों की अनुपलब्धता, कमजोर इंटरनेट संपर्क, तकनीकी ज्ञान का अभाव और ऑनलाइन धोखाधड़ी का भय प्रमुख बाधाएँ हैं। अतः ग्रामीण महिलाओं की स्थायी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए नियमित प्रशिक्षण, सुरक्षित डिजिटल व्यवहार, सरल बैंकिंग व्यवस्था और निरंतर संस्थागत मार्गदर्शन आवश्यक है।

प्रमुख शब्द

ग्रामीण महिलाएँ, आर्थिक आत्मनिर्भरता, डिजिटल साक्षरता, वित्तीय समावेशन, डिजिटल बैंकिंग, महिला उद्यमिता, स्वरोजगार, सामाजिक सशक्तिकरण।

1. प्रस्तावना

ग्रामीण महिलाएँ कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग और घरेलू उत्पादन के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं, किंतु शिक्षा, तकनीकी कौशल, वित्तीय संसाधनों और बाजार तक सीमित पहुँच के कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता प्रभावित होती है। वर्तमान डिजिटल युग में मोबाइल, अंतरजाल और डिजिटल सेवाओं का ज्ञान महिलाओं को बैंकिंग, सरकारी योजनाओं, प्रशिक्षण, रोजगार और बाजार संबंधी अवसरों से जोड़ने का प्रभावी माध्यम बन गया है (बंसल, 2021)। डिजिटल बैंकिंग महिलाओं में बचत, वित्तीय अनुशासन और बैंक खातों के स्वतंत्र उपयोग की क्षमता विकसित करती है (खैतान, 2018), जबकि ऑनलाइन माध्यम उन्हें अपने उत्पादों के प्रचार, बिक्री

और ग्राहकों से प्रत्यक्ष संपर्क के अवसर प्रदान करते हैं (धवन, 2017; लोहानी, 2020)। फिर भी तकनीकी प्रशिक्षण की कमी, कमजोर अंतरजाल संपर्क, डिजिटल उपकरणों की अनुपलब्धता और ऑनलाइन धोखाधड़ी का भय महिलाओं की डिजिटल सहभागिता को सीमित करता है (सिद्दीकी, 2018)। अतः ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए डिजिटल साक्षरता को वित्तीय जागरूकता, स्वरोजगार, सुरक्षित डिजिटल व्यवहार और बाजार संपर्क से जोड़ना आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता में डिजिटल साक्षरता की भूमिका का अध्ययन करना।
2. डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन विपणन और तकनीकी साधनों से ग्रामीण महिलाओं को प्राप्त आर्थिक अवसरों का विश्लेषण करना।
3. ग्रामीण महिलाओं की डिजिटल सहभागिता में आने वाली प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी बाधाओं की पहचान करना।

2. डिजिटल साक्षरता की अवधारणा

डिजिटल साक्षरता से आशय मोबाइल, संगणक, अंतरजाल और अन्य तकनीकी साधनों का सुरक्षित, प्रभावी तथा उद्देश्यपूर्ण उपयोग करने की क्षमता से है। यह केवल उपकरण चलाने का ज्ञान नहीं है, बल्कि डिजिटल माध्यम से जानकारी प्राप्त करने, उसका मूल्यांकन करने, ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग करने तथा व्यक्तिगत और आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने की योग्यता भी है। डिजिटल साक्षरता व्यक्ति को सरकारी योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, रोजगार और बाजार से संबंधित सूचनाओं तक त्वरित पहुँच प्रदान करती है। ग्रामीण संदर्भ में डिजिटल ज्ञान महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक अवसरों से जोड़कर उनकी आत्मनिर्भरता को मजबूत करता है (बंसल, 2021)।

डिजिटल साक्षरता के प्रमुख आयामों में मोबाइल का संचालन, संदेश और ई-पत्र का प्रयोग, अंतरजाल पर उपयोगी जानकारी प्राप्त करना, ऑनलाइन आवेदन भरना, डिजिटल भुगतान करना, बैंक खाते की जानकारी देखना तथा सरकारी सेवाओं का ऑनलाइन उपयोग शामिल है। इसके अतिरिक्त महिलाएँ डिजिटल माध्यमों से अपने उत्पादों का प्रचार, ग्राहकों से संपर्क और ऑनलाइन बिक्री भी कर सकती हैं। डिजिटल बैंकिंग का ज्ञान महिलाओं में बचत, आर्थिक अनुशासन और वित्तीय सेवाओं के स्वतंत्र उपयोग की क्षमता विकसित करता है (खैतान, 2018)। डिजिटल साक्षरता में ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव, सुरक्षित संकेतशब्द का प्रयोग, गोपनीय बैंकिंग जानकारी की रक्षा तथा संदिग्ध संदेशों की पहचान भी महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार डिजिटल साक्षरता सूचना, वित्त और बाजार तक पहुँच प्रदान करते हुए महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बनती है।

3. ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

ग्रामीण महिलाएँ कृषि, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग और घरेलू उत्पादन के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। वे खेती के विभिन्न चरणों, पशुओं की देखभाल, जल एवं ईंधन संग्रह तथा परिवार के पोषण में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। इसके बावजूद उनके अधिकांश घरेलू और कृषि संबंधी श्रम को अवैतनिक कार्य माना जाता है, जिसके कारण उनके आर्थिक योगदान को पर्याप्त सामाजिक मान्यता नहीं मिलती। ग्रामीण महिलाओं की बड़ी संख्या असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, जहाँ उन्हें कम मजदूरी, अस्थिर रोजगार, सामाजिक सुरक्षा की कमी और सीमित कार्य अवसरों का सामना करना पड़ता है (टंडन, 2019)।

शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण की कमी ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक प्रगति में प्रमुख बाधा है। कम शैक्षिक स्तर के कारण उन्हें बैंकिंग प्रक्रियाओं, सरकारी योजनाओं, ऋण सुविधाओं और डिजिटल सेवाओं की जानकारी प्राप्त करने में कठिनाई होती है। डिजिटल साधनों की सीमित उपलब्धता और तकनीकी ज्ञान का अभाव उन्हें ऑनलाइन शिक्षा, रोजगार और बाजार के अवसरों से भी दूर रखता है (चड्ढा, 2017)। ग्रामीण महिलाओं की बैंक एवं संस्थागत ऋण तक पहुँच सीमित होती है, जबकि भूमि और संपत्ति पर स्वामित्व का अभाव उनकी आर्थिक सुरक्षा को कमजोर करता है। परिवार के आर्थिक निर्णयों में उनकी भागीदारी भी प्रायः सीमित रहती है। सामाजिक रूढ़ियाँ, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, घरेलू जिम्मेदारियाँ और महिलाओं की गतिशीलता पर नियंत्रण उनकी शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार में सहभागिता को प्रभावित करते हैं (सिद्दीकी, 2018)। अतः ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण, वित्तीय समावेशन, डिजिटल पहुँच और स्वरोजगार के अवसरों का विस्तार आवश्यक है।

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता से आशय ऐसी स्थिति से है, जिसमें महिलाएँ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वतंत्र रूप से आय अर्जित कर सकें, आर्थिक संसाधनों का प्रबंधन कर सकें तथा परिवार से संबंधित वित्तीय निर्णयों में प्रभावी भूमिका निभा सकें। आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल रोजगार प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें नियमित आय, आय पर नियंत्रण, बचत, बैंक खाते का स्वतंत्र उपयोग, संस्थागत ऋण तक पहुँच और स्वरोजगार संचालन की क्षमता भी सम्मिलित होती है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिला परिवार और समाज में अधिक आत्मविश्वास, सम्मान तथा निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त करती है (टंडन, 2019)।

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के प्रमुख संकेतकों में स्वयं की नियमित आय, अर्जित आय के उपयोग पर अधिकार, बचत करने की क्षमता, बैंकिंग सेवाओं का स्वतंत्र प्रयोग तथा आवश्यकता पड़ने पर ऋण प्राप्त करने की योग्यता शामिल हैं। डिजिटल बैंकिंग और मोबाइल सेवाओं का ज्ञान महिलाओं को बैंक खातों की जानकारी प्राप्त करने, धन का सुरक्षित लेन-देन करने और बचत का बेहतर प्रबंधन करने में सक्षम बनाता है (खैतान, 2018)। इसी प्रकार तकनीकी ज्ञान और डिजिटल बाजारों तक पहुँच महिलाओं को हस्तशिल्प, कृषि उत्पाद, खाद्य सामग्री

तथा अन्य घरेलू उत्पादों के माध्यम से स्वरोजगार स्थापित करने में सहायता करती है (धवन, 2017; लोहानी, 2020)।

आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रभाव महिलाओं के व्यक्तिगत जीवन से आगे बढ़कर परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर भी पड़ता है। नियमित आय अर्जित करने वाली महिलाएँ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, घरेलू व्यय और भविष्य की बचत से जुड़े निर्णयों में अधिक सक्रिय भागीदारी करती हैं। आय और संसाधनों पर नियंत्रण महिलाओं की पारिवारिक निर्णय क्षमता तथा आत्मविश्वास को सुदृढ़ करता है (भाटिया, 2018)। संपत्ति और उत्पादन संबंधी संसाधनों तक पहुँच आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है तथा संकट की स्थिति में परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता बढ़ाती है। इस प्रकार ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को केवल आय प्राप्ति के रूप में नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सम्मान, पारिवारिक सहभागिता और स्वतंत्र जीवन-निर्णय की व्यापक प्रक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए।

4. आर्थिक आत्मनिर्भरता में डिजिटल साक्षरता की भूमिका

डिजिटल साक्षरता ग्रामीण महिलाओं को सूचना, बैंकिंग, बाजार, कौशल विकास और सरकारी सेवाओं तक पहुँच प्रदान करके उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत करती है। तकनीकी साधनों का स्वतंत्र उपयोग महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करने, आय के नए स्रोत विकसित करने तथा पारिवारिक निर्णयों में अपनी भूमिका बढ़ाने में सहायता करता है। डिजिटल ज्ञान का विस्तार ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक अवसरों और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है (बंसल, 2021)।

4.1 डिजिटल बैंकिंग तक पहुँच

डिजिटल साक्षरता ग्रामीण महिलाओं को मोबाइल के माध्यम से बैंक खाते की शेष राशि देखने, धन हस्तांतरित करने, लेन-देन का विवरण प्राप्त करने और बचत का प्रबंधन करने में सक्षम बनाती है। इससे बैंक शाखाओं की दूरी और दूसरों पर निर्भरता कम होती है तथा महिलाओं में वित्तीय अनुशासन विकसित होता है। डिजिटल बैंकिंग का ज्ञान ग्रामीण महिलाओं की बचत संबंधी आदतों और आर्थिक नियंत्रण को सुदृढ़ करता है (खैतान, 2018)।

4.2 प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण

डिजिटल बैंकिंग से जुड़ी महिलाएँ सरकारी योजनाओं की आर्थिक सहायता सीधे अपने खातों में प्राप्त कर सकती हैं। इससे सहायता वितरण में पारदर्शिता बढ़ती है, बिचौलियों की भूमिका कम होती है और महिलाओं को प्राप्त धन पर अपेक्षाकृत अधिक नियंत्रण मिलता है। डिजिटल समावेशन महिलाओं को सरकारी लाभों तक सरल और प्रत्यक्ष पहुँच प्रदान करता है (टंडन, 2020)।

4.3 डिजिटल भुगतान

मोबाइल आधारित भुगतान प्रणालियाँ महिलाओं को घरेलू खरीद, व्यवसाय संबंधी लेन-देन, बिल भुगतान और धन हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करती हैं। नकद धन पर निर्भरता कम होने से लेन-देन अधिक सुरक्षित और व्यवस्थित हो सकता है। डिजिटल भुगतान का उपयोग ग्रामीण महिला उद्यमियों के व्यवसाय संचालन और वित्तीय प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाता है (थॉमस, 2020)।

4.4 ऑनलाइन बाजार से जुड़ाव

डिजिटल माध्यम ग्रामीण महिलाओं को हस्तशिल्प, वस्त्र, खाद्य सामग्री, कृषि उत्पाद और घरेलू वस्तुओं का प्रचार एवं विक्रय करने का अवसर प्रदान करते हैं। ऑनलाइन बाजार के माध्यम से महिलाएँ स्थानीय क्षेत्र से बाहर के ग्राहकों तक पहुँच सकती हैं तथा बिचौलियों पर निर्भरता कम कर सकती हैं। डिजिटल मंचों ने ग्रामीण महिलाओं के उत्पादों के लिए व्यापक बाजार की संभावनाएँ विकसित की हैं (धवन, 2017; लोहानी, 2020)।

4.5 स्वरोजगार के अवसर

डिजिटल साक्षरता महिलाओं को घर से छोटे व्यवसाय संचालित करने, ग्राहकों से संपर्क करने, उत्पादों की जानकारी साझा करने और डिजिटल भुगतान स्वीकार करने में सहायता करती है। इससे घरेलू जिम्मेदारियों के साथ आय अर्जित करने के अवसर विकसित होते हैं। डिजिटल कौशल का विकास महिला स्वरोजगार और उद्यमिता की संभावनाओं को बढ़ाता है (मल्होत्रा, 2020)।

4.6 सरकारी योजनाओं की जानकारी

अंतरजाल और मोबाइल सेवाओं के माध्यम से महिलाएँ सरकारी योजनाओं की पात्रता, आवेदन प्रक्रिया, ऋण सुविधाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और आर्थिक सहायता की जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। इससे योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ती है और महिलाओं को उपलब्ध अवसरों का समय पर लाभ लेने में सहायता मिलती है। डिजिटल साक्षरता अभियानों ने ग्रामीण महिलाओं को सरकारी सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने में उपयोगी भूमिका निभाई है (उप्पल, 2021)।

4.7 शिक्षा और कौशल विकास

ऑनलाइन शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षण कार्यक्रम और दृश्य-श्रव्य साधनों के माध्यम से ग्रामीण महिलाएँ सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, लेखा प्रबंधन और विपणन जैसे कौशल सीख सकती हैं। डिजिटल शिक्षा उन्हें समय और स्थान की सीमाओं से बाहर प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर देती है। शिक्षा और डिजिटल साक्षरता का समन्वय महिलाओं के रोजगार एवं आय अर्जन की क्षमता को बढ़ाता है (चड्ढा, 2017; महाजन, 2016)।

4.8 कृषि एवं पशुपालन संबंधी जानकारी

डिजिटल माध्यमों से महिलाएँ मौसम, फसल मूल्य, बीज, खाद, रोग नियंत्रण, पशुपालन, सरकारी अनुदान और स्थानीय बाजार से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। समय पर प्राप्त सूचना उत्पादन लागत कम करने, उचित निर्णय लेने और उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त करने में सहायक होती है। सूचना प्रौद्योगिकी ग्रामीण कृषि-आधारित महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है (खन्ना, 2017)।

4.9 वित्तीय साक्षरता

डिजिटल प्रशिक्षण महिलाओं को बचत, ऋण, बीमा, पेंशन, ब्याज दर और निवेश से संबंधित मूलभूत जानकारी प्रदान करता है। वित्तीय ज्ञान के माध्यम से महिलाएँ अनावश्यक ऋण से बच सकती हैं, घरेलू बजट बना सकती हैं तथा आय का योजनाबद्ध उपयोग कर सकती हैं। डिजिटल और वित्तीय साक्षरता का संयुक्त विकास ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को मजबूत करता है (बंसल, 2021; खैतान, 2018)।

4.10 आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता

मोबाइल और डिजिटल सेवाओं का स्वतंत्र उपयोग महिलाओं में आत्मविश्वास, सामाजिक संपर्क और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है। आर्थिक जानकारी और आय के अवसर प्राप्त होने पर महिलाएँ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, घरेलू व्यय, बचत और व्यवसाय से संबंधित निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं। तकनीकी साक्षरता ग्रामीण महिलाओं की पारिवारिक निर्णय क्षमता और सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन लाती है (भाटिया, 2018)। डिजिटल साधनों का प्रयोग महिला नेतृत्व और सामुदायिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित करता है (सेठी, 2019)।

इस प्रकार डिजिटल साक्षरता ग्रामीण महिलाओं को केवल तकनीकी उपकरणों का उपयोग करना नहीं सिखाती, बल्कि उन्हें बैंकिंग, सरकारी योजनाओं, बाजार, शिक्षा और स्वरोजगार से जोड़कर आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है। हालांकि इसके व्यापक प्रभाव के लिए डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता, स्थानीय भाषा में प्रशिक्षण, सुरक्षित उपयोग की जानकारी और निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन आवश्यक है।

5. महिला उद्यमिता में डिजिटल साधनों की भूमिका

डिजिटल साधनों ने ग्रामीण महिला उद्यमियों के लिए व्यवसाय प्रारंभ करने, संचालित करने और उसका विस्तार करने के नए अवसर उत्पन्न किए हैं। मोबाइल और अंतरजाल के माध्यम से महिलाएँ हस्तशिल्प, वस्त्र, खाद्य पदार्थ, कृषि उत्पाद, सजावटी वस्तुएँ तथा अन्य घरेलू उत्पादों का ऑनलाइन प्रचार कर सकती हैं। सामाजिक संचार माध्यमों पर उत्पादों के चित्र, मूल्य और विशेषताएँ साझा करने से स्थानीय क्षेत्र के बाहर भी नए ग्राहक बनाए जा सकते हैं। डिजिटल कौशल महिला स्वरोजगार और छोटे व्यवसायों के विकास में सहायक सिद्ध होता है (मल्होत्रा, 2020)।

डिजिटल भुगतान प्रणालियों के प्रयोग से महिला उद्यमी ग्राहकों से सुरक्षित एवं त्वरित भुगतान स्वीकार कर सकती हैं तथा अपने व्यवसाय से संबंधित आय और व्यय का व्यवस्थित अभिलेख रख सकती हैं। इससे नकद लेन-देन पर निर्भरता कम होती है और आर्थिक गतिविधियों में पारदर्शिता बढ़ती है। डिजिटल भुगतान का उपयोग ग्रामीण महिला उद्यमियों के वित्तीय प्रबंधन और व्यवसाय संचालन को सरल बनाता है (थॉमस, 2020)। इसके अतिरिक्त महिलाएँ अंतरजाल के माध्यम से कच्चे माल की कीमत, उत्पादों की बाजार माँग, प्रतिस्पर्धी मूल्य और उपभोक्ताओं की पसंद से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकती हैं।

ऑनलाइन विपणन महिलाओं को ग्राहकों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करने और बिचौलियों पर निर्भरता कम करने का अवसर देता है। इससे उत्पाद का अधिक उचित मूल्य प्राप्त होने और लाभ में वृद्धि की संभावना बनती है। डिजिटल मंचों ने ग्रामीण महिला कारीगरों और घरेलू उत्पाद निर्माताओं को अपने स्थानीय व्यवसाय का व्यापक बाजार तक विस्तार करने में सहायता प्रदान की है (धवन, 2017; लोहानी, 2020)। महिलाएँ ग्राहकों की माँग के अनुसार उत्पादों में सुधार कर सकती हैं तथा प्रतिक्रिया के आधार पर अपने व्यवसाय की गुणवत्ता बढ़ा सकती हैं।

स्वयं सहायता समूह भी डिजिटल माध्यमों से अपने सदस्यों द्वारा निर्मित उत्पादों का सामूहिक प्रचार और बिक्री कर सकते हैं। समूह स्तर पर उत्पादों की सूची तैयार करने, आय-व्यय का लेखा रखने, ग्राहकों से संपर्क करने और बैंकिंग गतिविधियों का संचालन करने में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी उपयोगी सिद्ध होती है (नेगी, 2019)। डिजिटल साधनों के कारण महिलाएँ घर से व्यवसाय का संचालन कर सकती हैं, जिससे घरेलू जिम्मेदारियों के साथ आय अर्जित करना संभव होता है। इस प्रकार डिजिटल तकनीक महिला उद्यमिता को बाजार संपर्क, वित्तीय सुविधा, ग्राहक विस्तार और व्यवसाय प्रबंधन से जोड़कर ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत करती है।

6. ग्रामीण महिलाओं के डिजिटल एवं आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित प्रमुख सरकारी योजनाएँ एवं पहल

6.1 डिजिटल भारत अभियान

डिजिटल भारत अभियान का उद्देश्य डिजिटल सेवाओं और तकनीकी सुविधाओं को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाना तथा नागरिकों को ऑनलाइन सरकारी सेवाओं से जोड़ना है। इस पहल के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रमाण-पत्र, सरकारी योजनाओं और बाजार संबंधी सेवाओं तक डिजिटल पहुँच प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं। डिजिटल सेवाओं की उपलब्धता ग्रामीण महिलाओं के सूचना और आर्थिक अवसरों से जुड़ाव को मजबूत करती है (बंसल, 2021)।

6.2 प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान

इस अभियान का उद्देश्य ग्रामीण परिवारों के सदस्यों को मोबाइल, संगणक, अंतरजाल और ऑनलाइन सेवाओं के उपयोग का प्रशिक्षण प्रदान करना है। डिजिटल प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाएँ ऑनलाइन जानकारी प्राप्त करने, डिजिटल भुगतान करने, सरकारी सेवाओं का उपयोग करने और सुरक्षित तकनीकी व्यवहार अपनाने में

सक्षम बनती हैं। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों ने ग्रामीण महिलाओं की तकनीकी क्षमता और आत्मविश्वास बढ़ाने में सकारात्मक भूमिका निभाई है (उप्पल, 2021)।

6.3 प्रधानमंत्री जन-धन योजना

प्रधानमंत्री जन-धन योजना ने महिलाओं को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था, बचत, बीमा और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण जैसी सुविधाओं से जोड़ने में सहायता की है। बैंक खाते के माध्यम से महिलाएँ सरकारी सहायता सीधे प्राप्त कर सकती हैं और अपनी बचत का बेहतर प्रबंधन कर सकती हैं। डिजिटल बैंकिंग का ज्ञान महिलाओं की बचत की आदत और आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण को मजबूत करता है (खैतान, 2018)।

6.4 दीनदयाल अंत्योदय योजना—राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन

यह योजना ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित करके बचत, बैंक ऋण, कौशल विकास, स्वरोजगार और उद्यमिता से जोड़ती है। स्वयं सहायता समूहों में डिजिटल साधनों के प्रयोग से सामूहिक लेखा-जोखा, बैंकिंग, प्रशिक्षण और उत्पादों के विपणन की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का समावेश स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक गतिविधियों और संस्थागत संपर्क को मजबूत करता है (नेगी, 2019)।

6.5 प्रधानमंत्री मुद्रा योजना

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना महिला उद्यमियों को छोटे व्यवसाय और स्वरोजगार गतिविधियाँ आरंभ करने के लिए ऋण सुविधा उपलब्ध कराने का माध्यम है। इस योजना के अंतर्गत महिलाएँ खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, दुकानदारी, सिलाई, पशुपालन और अन्य लघु व्यवसायों के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त कर सकती हैं। ऋण के साथ डिजिटल कौशल और बाजार की जानकारी मिलने से महिला उद्यमिता की स्थिरता तथा विस्तार की संभावनाएँ बढ़ती हैं (मल्होत्रा, 2020)।

6.6 साझा सेवा केंद्र

साझा सेवा केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन आवेदन, बैंकिंग, प्रमाण-पत्र, बीमा, भुगतान और अन्य सरकारी सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं। ये केंद्र उन महिलाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं, जिनके पास व्यक्तिगत डिजिटल उपकरण या पर्याप्त तकनीकी ज्ञान नहीं होता। स्थानीय स्तर पर डिजिटल सेवाओं की उपलब्धता महिलाओं की सरकारी योजनाओं और आर्थिक सुविधाओं तक पहुँच को सरल बनाती है (टंडन, 2020)।

6.7 महिला ई-हाट

महिला ई-हाट का उद्देश्य महिला उद्यमियों और स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों को ऑनलाइन बाजार से जोड़ना है। इसके माध्यम से महिलाएँ हस्तशिल्प, वस्त्र, खाद्य सामग्री और घरेलू उत्पादों का

प्रचार कर सकती हैं तथा व्यापक ग्राहक वर्ग तक पहुँच बना सकती हैं। ऑनलाइन बाजार ग्रामीण महिला कारीगरों के लिए व्यवसाय विस्तार और आय वृद्धि की नई संभावनाएँ उत्पन्न करता है (लोहानी, 2020)।

6.8 लखपति दीदी पहल

लखपति दीदी पहल स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण, उद्यमिता, वित्तीय साक्षरता और स्थायी आजीविका से जोड़ने पर केंद्रित है। डिजिटल साधनों के माध्यम से महिलाएँ बाजार, बैंकिंग, सरकारी सहायता और व्यवसाय संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। तकनीकी ज्ञान और सामूहिक नेतृत्व का विकास ग्रामीण महिलाओं की आय तथा सामाजिक सहभागिता को मजबूत करता है (सेठी, 2019)।

इन योजनाओं और पहलों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए डिजिटल प्रशिक्षण, वित्तीय सेवाएँ, स्वरोजगार, बाजार संपर्क और संस्थागत सहयोग परस्पर संबंधित हैं। इनका प्रभावी क्रियान्वयन महिलाओं को सूचना प्राप्त करने, आर्थिक गतिविधियाँ संचालित करने और पारिवारिक तथा सामाजिक निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम बना सकता है।

7. डिजिटल साक्षरता के सामाजिक परिणाम

डिजिटल साक्षरता का प्रभाव केवल महिलाओं की आय अथवा रोजगार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह उनकी सामाजिक स्थिति, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता में भी परिवर्तन लाती है। मोबाइल, अंतरजाल और डिजिटल सेवाओं का स्वतंत्र उपयोग ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास विकसित करता है तथा उन्हें परिवार के आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सक्षम बनाता है। तकनीकी साक्षरता महिलाओं की पारिवारिक निर्णय क्षमता और सामाजिक प्रतिष्ठा को मजबूत करती है (भाटिया, 2018)।

डिजिटल माध्यमों से महिलाएँ सरकारी योजनाओं, कानूनी अधिकारों, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और रोजगार संबंधी जानकारी सीधे प्राप्त कर सकती हैं। इससे सरकारी कार्यालयों, बैंकों और अन्य संस्थाओं तक उनकी पहुँच बढ़ती है तथा दूसरों पर निर्भरता कम होती है। अंतरजाल ने ग्रामीण महिलाओं के लिए सूचना तक पहुँच को अधिक सरल बनाया है, जिससे उनकी जागरूकता और सामाजिक सहभागिता में वृद्धि हुई है (मल्लिक, 2015)।

सामाजिक संचार माध्यमों और ऑनलाइन समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाएँ अन्य महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों और महिला उद्यमियों से संपर्क स्थापित कर सकती हैं। इससे अनुभवों का आदान-प्रदान, सामूहिक सहयोग और सामाजिक नेतृत्व की भावना विकसित होती है। डिजिटल साधनों का उपयोग महिला नेतृत्व और सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है (सेठी, 2019)। इस प्रकार डिजिटल साक्षरता सामाजिक अलगाव को कम करते हुए महिलाओं की गतिशीलता बढ़ाती है और पितृसत्तात्मक निर्भरता में आंशिक कमी लाती है।

8. डिजिटल सहभागिता की बाधाएँ एवं सशक्तिकरण हेतु सुझाव

- ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा का निम्न स्तर डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन सेवाओं को समझने में कठिनाई उत्पन्न करता है (चड्ढा, 2017)।
- मोबाइल, संगणक और अंतरजाल की सीमित उपलब्धता महिलाओं की डिजिटल सहभागिता को प्रभावित करती है।
- अनेक परिवारों में डिजिटल उपकरणों पर पुरुष सदस्यों का नियंत्रण महिलाओं के स्वतंत्र उपयोग को सीमित करता है (सिद्दीकी, 2018)।
- ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल प्रशिक्षण केंद्रों और प्रशिक्षित मार्गदर्शकों की कमी पाई जाती है।
- स्थानीय एवं सरल भाषा में डिजिटल सामग्री उपलब्ध न होने के कारण अल्पशिक्षित महिलाओं को कठिनाई होती है।
- ऑनलाइन धोखाधड़ी, गलत संदेश, गोपनीय जानकारी की चोरी और वित्तीय नुकसान का भय डिजिटल सेवाओं के उपयोग को सीमित करता है।
- कमजोर अंतरजाल संपर्क और अनियमित विद्युत आपूर्ति ऑनलाइन कार्यों में बाधा उत्पन्न करती है (राव, 2021)।
- आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के लिए स्मार्ट मोबाइल और इंटरनेट सेवा का खर्च वहन करना कठिन होता है।

सुझाव

- ग्राम पंचायत स्तर पर महिलाओं के लिए नियमित और व्यावहारिक डिजिटल प्रशिक्षण आयोजित किया जाना चाहिए।
- प्रशिक्षण सामग्री स्थानीय एवं सरल भाषा में चित्रों और दृश्य-श्रव्य माध्यमों के साथ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- स्वयं सहायता समूहों को डिजिटल प्रशिक्षण और जागरूकता के प्रमुख माध्यम के रूप में विकसित किया जाना चाहिए (नेगी, 2019)।
- महिलाओं को ऑनलाइन बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, धन हस्तांतरण और सुरक्षित संकेतशब्द के प्रयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- ऑनलाइन धोखाधड़ी, संदिग्ध संदेशों और गोपनीय बैंकिंग जानकारी की सुरक्षा के संबंध में जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए।

- ग्रामीण क्षेत्रों में अंतरजाल संपर्क, विद्युत आपूर्ति और डिजिटल सेवा केंद्रों की उपलब्धता में सुधार किया जाना चाहिए।
- निर्धन महिलाओं को कम लागत अथवा सहायता प्राप्त डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- महिला उत्पादों की बिक्री के लिए स्थानीय बाजारों को ऑनलाइन मंचों से जोड़ा जाना चाहिए, जिससे व्यापक ग्राहक वर्ग तक पहुँच बनाई जा सके (लोहानी, 2020)।

9. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल साक्षरता ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत करने वाला एक प्रभावी माध्यम है। इसके द्वारा महिलाएँ बैंकिंग सेवाओं, डिजिटल भुगतान, सरकारी योजनाओं, कौशल प्रशिक्षण, कृषि संबंधी जानकारी, ऑनलाइन बाजार और स्वरोजगार के अवसरों तक पहुँच प्राप्त कर सकती हैं। डिजिटल साधनों का स्वतंत्र उपयोग उनकी बचत क्षमता, आय प्रबंधन, उद्यमिता, आत्मविश्वास और पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता को बढ़ाता है। साथ ही, स्वयं सहायता समूहों, ऑनलाइन विपणन और डिजिटल वित्तीय सेवाओं के माध्यम से महिलाएँ स्थानीय बाजार की सीमाओं से बाहर व्यापक आर्थिक अवसरों से जुड़ सकती हैं। इसके बावजूद शिक्षा का निम्न स्तर, डिजिटल उपकरणों की कमी, कमजोर अंतरजाल संपर्क, पारिवारिक नियंत्रण, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव और ऑनलाइन धोखाधड़ी का भय उनकी डिजिटल सहभागिता को सीमित करते हैं। अतः ग्रामीण महिलाओं की स्थायी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए स्थानीय भाषा में नियमित प्रशिक्षण, सुरक्षित डिजिटल व्यवहार, सुलभ उपकरण, बेहतर अंतरजाल सुविधा, वित्तीय जागरूकता और निरंतर संस्थागत सहयोग आवश्यक है। इस प्रकार डिजिटल साक्षरता को केवल तकनीकी ज्ञान नहीं, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की व्यापक प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

बंसल, एच. (2021). ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डिजिटल साक्षरता का महत्व. *भारतीय विकास अध्ययन*, 12(1), 45-58।

मल्होत्रा, ई. (2020). डिजिटल कौशल और महिला स्वरोजगार: एक क्षेत्रीय विश्लेषण. *जर्नल ऑफ सोशल डायनामिक्स*, 15(3), 112-127।

टंडन, एन. (2019). सूचना तकनीक और ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक उत्थान. *विकास और ग्रामीण समाज*, 9(2), 33-49।

खैतान, आर. (2018). डिजिटल बैंकिंग और ग्रामीण महिलाओं की बचत आदतें. *वित्तीय साक्षरता पत्रिका*, 14(4), 88-102।

सक्सेना, सी. (2021). ग्रामीण भारत में मोबाइल साक्षरता और महिला आत्मनिर्भरता. *संचार और समाज*, 7(3), 210-225।

धवन, वी. (2017). डिजिटल इंडिया और ग्रामीण महिलाओं की बाजार तक पहुंच. *अर्थशास्त्र और नीति जर्नल*, 11(2), 56-70।

नेगी, बी. (2019). ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहों में आईसीटी का एकीकरण. *सहकारिता शोध*, 6(1), 15-29।

सिद्दीकी, एम. (2018). जेंडर डिजिटल डिवाइड: ग्रामीण महिलाओं के समक्ष चुनौतियां. *समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य*, 20(4), 95-110।

लोहानी, जे. (2020). ई-कॉमर्स और ग्रामीण महिला कारीगर: एक अध्ययन. *उद्यमिता और विकास*, 18(2), 140-155।

चड्ढा, पी. (2017). ग्रामीण शिक्षा और डिजिटल साक्षरता का अंतर्संबंध. *शिक्षा विकास समीक्षा*, 5(3), 201-215।

गार्ग, एम. (2019). महिला सशक्तिकरण में डिजिटल उपकरण: हरियाणा का एक केस स्टडी. *ग्रामीण अध्ययन*, 12(1), 60-75।

उप्पल, डी. (2021). डिजिटल साक्षरता अभियान की ग्रामीण महिलाओं पर प्रभावकारिता. *सार्वजनिक नीति जर्नल*, 22(2), 115-130।

भाटिया, के. (2018). तकनीकी साक्षरता और ग्रामीण महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता. *महिला अध्ययन जर्नल*, 15(3), 82-97।

मल्लिक, एस. (2015). इंटरनेट और ग्रामीण महिलाओं की सूचना तक पहुंच. *भारतीय सामाजिक विज्ञान*, 2(2), 40-54।

थॉमस, ए. (2020). डिजिटल भुगतान प्रणाली और ग्रामीण महिला उद्यमी. *व्यापार और विकास*, 10(1), 22-38।

खन्ना, ओ. (2017). सूचना प्रौद्योगिकी: ग्रामीण कृषि-आधारित महिला सशक्तिकरण. *कृषि समाज विज्ञान*, 13(4), 105-120।

महाजन, यू. (2016). डिजिटल प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर. *प्रबंधन और समाज*, 8(2), 55-68।

राव, वाई. (2021). ग्रामीण कनेक्टिविटी और महिलाओं की आत्मनिर्भरता की स्थिति. *समकालीन ग्रामीण भारत*, 16(3), 130-145।

सेठी, टी. (2019). तकनीक और महिला नेतृत्व का उदय: एक समाजशास्त्रीय दृष्टि. *जेंडर अध्ययन जर्नल*, 3(1), 12-26।

टंडन, एस. (2020). ग्रामीण महिलाओं का डिजिटल समावेशन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *विकास बुलेटिन*, 19(2), 85-99।